* K - 0 1 1 0 *

K-0110

Third Year B. A. Examination

September / October – 2012

Hindi : Paper - I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :
☛ THIRD YEAR B. A.

Name of the Subject :
☛ HINDI - 1

☛ Subject Code No. : 0 1 1 0 ☛ Section No. (1, 2,.....) : NIL

Seat No. :

Student's Signature

(२) दाहिनी ओर प्रश्नों के अंक रखे हैं ।

१ काव्य–कला की दृष्टि से कबीर की कविता का मूल्यांकन कीजिए । १४

अथवा

१ ''नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है ।'' 'नागमती वियोग खण्ड' के आधार पर सिद्ध कीजिए । १४

२ 'रीति सिद्ध' कवि के रूप में विहारी का मूल्यांकन कीजिए । १४

अथवा

२ सूरदासजी द्वारा वर्णित 'भ्रमर–गीत प्रसंग' की विशेषताएँ उद्‌घाटित कीजिए । १४

३ तुलसी की रामभक्ति पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

३ पठित पदों के आधार पर मीराँ की माधुर्य भावना पर प्रकाश डालिए । १४

४ टिप्पणियाँ लिखिए : १४

(अ) कबीर के माया संबंधी विचार

अथवा

(अ) सूरदास की भाषा–शैली

(ब) तुलसी की अलंकार योजना

अथवा

(ब) जायसी का प्रेम–निरूपण

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए । १४

(क) कबीर माला काठ की, कहि समुझावै तोहि ।
मन न फिरावै आपनौ, कहा फिरावै मोहि ॥
माला पहरया कुछ नहीं, गांठि हिरदा की खोइ ।
हरि चरनूँ चित्त राखिये, तो अमरापुर होइ ॥

अथवा

(क) ऊधो ! तुम कहियो हरि सों जाय हमारे जिय की दरद ।
दिन नहिं चैन, रैन नहिं सोवत, पावक भई जुन्हैया सरद ॥
जब तें अक्रूर लै गए मधुपुरी, भइ बिरह तन बाय छरद ।
किन्हीं प्रबल जगी अति, ऊधो ! सोचन भइ जस पीरी हरद ॥
सखा प्रबीन निरन्तर हौ तुम तातें कहिपत खोलि परदा ।

(ड) दूलह राम, सीय दुहली री !
धन–दामिनी बर बरन हरन–मन सुंदरता नखसिख निबही, री ॥
ब्याह–बिभूषण–बसन–बिभूषित, सखि–अवली लखि ठगि सी रही, री ॥
जीवन–जनम–लाहु, लोचन–फल है इतनोइ, लह्यो आजु सही, री ॥
सुखमा सुरभि सिंगार–छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दही, री ॥
मथि माखन सिय–राम सँवारे, सकल–भुवन–छबि मनहु मही, री ॥

अथवा

(ड) भा भादों दुभर अति भारी । कैसे भरौं रैनि अँधियारी ॥
मंदिर सून पिउ अनते बसा । सेज नागिनी फिरि फिरि डसा ।
रहौं अकेलि गहे एक पाटी, नैन पसारि मरौं हिय फाटी ॥
चमकि बीजु घन गरजि तरासा । बिरह काल होउजीउ गरासा ॥
बरसै मघा झकोरी झकोरी । मोर दुइ नैन चुवै जस ओरी ॥